14

सूचना, संचार तथा प्रचार सेवाएं

कृषि सूचना एवं प्रकाशन निदेशालय (दीपा) ने आधुनिक प्रसार तकनीकों के माध्यम से कृषि के क्षेत्र में विभिन्न पणधारियों (स्टेकहोल्डर्स) की आवश्यकताओं को पूरा करने से जुड़ी भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की प्रौद्योगिकियों, नीतियों तथा अन्य क्रियाकलापों के प्रदर्शन व प्रचार तथा प्रसार के अपने प्रयासों को जारी रखा। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद पर प्रथम कार्पोरेट फिल्म, ड्राइवर्स ऑफ चेंज, वर्ष के दौरान जारी की गई। यह फिल्म राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भा.कृ.अ.प. की ब्रैण्ड पहचान को सृजित करने में बहुत प्रभावी व लोकप्रिय सिद्ध हुई। तेजी से परिवर्तित होते ज्ञान के गहन युग में 'दीपा' संदेशों को त्वरित गति से तथा और अधिक प्रभावी ढंग से आईसीटी- प्रेरित प्रौद्योगिकी तथा सूचना के प्रसार के लिए प्रतिबद्ध है। इस संदर्भ में दीपा ने खुले स्रोत वाली विषय वस्तु प्रबंधन प्रणाली का उपयोग करके परिषद की नई वेबसाइट विकसित की है जिसे 'ड्रूपाल' नाम दिया गया है। यह वेबसाइट संबंधित संगठनों के साथ लिंक के द्वारा और अधिक उपयोगकर्ता मित्र या उपयोगकर्ताओं के लिए अधिक सुविधाजनक बनाई गई है और इससे घरेलू तथा विदेशी उपयोगकर्ताओं को परिषद के संबंध में अधिक सरलता से जानकारी उपलब्ध होती है। आईसीएआर न्यूज तथा आईसीएआर रिपोर्टर जैसी गृह पत्रिकाएं ऑन-लाइन उपलब्ध कराईं गईं और इसके साथ ही परिषद के अन्य महत्वपूर्ण प्रकाशन भी ऑन लाइन उपलब्ध कराए गए। खाद्य एवं कृषि संगठन (एफएओ) के 'एग्रिस' डेटाबेस में शामिल किए जाने के लिए प्रकाशित पत्रिका लेखों के सूचीकरण द्वारा 450 से अधिक इनपुट तैयार किए गए। नेटवर्क कनेक्टिविटी में तेजी लाने के लिए भा.कृ.अ.प. मुख्यालयों (कैब-1 और 2) की लीज़ लाइन को ऑप्टीकल फाइबर में अपग्रेड किया जा रहा है तथा इसकी बैंडविथ भी दो Mbps से बढ़ाकर 10 Mbps कर दी गई है। फायरवाल, एंटी स्पैम तथा एंटी वायरस जैसी प्रभावी सुरक्षा प्रणालियां भी लागू की गई हैं। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के संस्थानों की वेबसाइटों में एकरूपता लाने के लिए दिशानिर्देश विकसित किए गए हैं। 'दीपा' ने आईपी टेलीफोनी तथा वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से भा.कृ.अ.प. के संस्थानों के बीच कम समय में संचार प्रणाली को सुविधाजनक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

वर्तमान ज्ञान के प्रसार की प्रवृत्तियों के साथ कदम से कदम मिलाकर चलते हुए भा.कृ.अ.प. के विभिन्न प्रकाशनों की 9300 सीडी/डीवीडी तैयार की गई और उपयोगकर्ताओं ने इनकी 1600 प्रतियां खरीदीं। इसके अतिरिक्त विभिन्न पणधारियों को सीडी की मानार्थ प्रतियां भी बांटी गईं। उच्च स्तर के राष्ट्रीय नई पहल के रूप में भा.कृ.अ.प. के संस्थानों/राज्य कृषि विश्वविद्यालयों को इलेक्ट्रॉनिक डिजिटल ब्रॉडबैंड के माध्यम से राष्ट्रीय ज्ञान नेटवर्क के साथ जोड़ा जा रहा है, ताकि सहयोगात्मक अनुसंधान के लिए संसाधनों की भागीदारी को और प्रोत्साहित किया जा सके। अब तक छह अनुसंधान संस्थानों/राज्य कृषि विश्वविद्यालयों को इस प्रकार जोड़ा जा चुका है तथा पहचाने गए संस्थानों को भी शीघ्र ही जोड़ा जाएगा। राष्ट्रीय कृषि नवोन्मेषी परियोजना (एनएआईपी) की 'ई-पब्लिशिंग एंड नॉलेज सिस्टम इन एग्रीकल्चरल रिसर्च (ई-पीकेएसएआर)' शीर्षक की एक उप परियोजना के अंतर्गत 11 जर्नलों/आवधिक प्रकाशनों के लिए ऑन-लाइन इलेक्ट्रॉनिक प्रकाशन प्रणाली लागू की जा रही है, जो पूर्णत: स्वचालित है। भा.कृ.अ.प. का पुस्तकालय, एनएआईपी की उप परियोजना ई-ग्रंथ का एक कंसोर्टियम भागीदार है जिसके अंतर्गत 12 भागीदारी पुस्तकालयों के सूचीपत्र से संबंधित सूचना को इंटरनेशनल स्टेंडर्ड फार्मेट (एमएआरसी 21) में परिवर्तित किया जा रहा है और इसे भा.कृ.अ.सं. की ''यूनियन केटेलॉग ऑफ एग्रीकल्चरल लाइब्रेरीज' में समाहित कर लिया जाएगा। भा.कृ.अ.प. पुस्तकालय अपने सदस्यों को ऑन-लाइन उपयोगकर्ता लॉगिन सुविधा उपलब्ध कराता है और बार-कोड प्रौद्योगिकी भी लागू की जा रही है जो परिचालन की प्रक्रिया में है।

वैज्ञानिक समुदायों में अनुसंधान संचार के अपने प्रयास में, 'दीपा' ने अपने अनुसंधान जर्नल : *इंडियन जर्नल ऑफ एग्रीकल्चरल साइंसिस और इंडियन जर्नल ऑफ एनिमल साइंसिस'* को प्रकाशित करना जारी रखा। पहले जर्नल में 236 अनुसंधान पत्र प्रकाशित हुए जिनमें से 5 विदेशों से प्राप्त अनुसंधान पत्र हैं जबकि बाद वाले जर्नल में 328 अनुसंधान पत्र प्रकाशित हुए जिनमें से 11 विदेशों से प्राप्त अनुसंधान पत्र हैं। प्रतिष्ठित विषय वस्तु विशेषज्ञों से अनुसंधान जर्नलों के लिए अनेक समीक्षाएं आमंत्रित की गईं। लोकप्रिय शैली में अनुसंधान एवं प्रौद्योगिकियों को किसानों तथा

अन्य पणधारियों तक पहुंचाने के लिए 'दीपा' ने *खेती, फल-फूल, कृषि चयनिका, इंडियन फार्मिंग* तथा इंडियन हॉर्टिकल्चर जैसे आवधिक प्रकाशनों को प्रकाशित करना जारी रखा। इनमें सफलता की ऐसी कहानियों तथा प्रौद्योगिकियों पर विशेष बल दिया गया जो अपनाए जाने के लिए तैयार थीं। वर्ष के दौरान इन लोकप्रिय आवधिक पत्रिकाओं में लगभग 500 लेख/फीचर प्रकाशित हुए। लोकप्रिय आवधिक प्रकाशनों को व्यावसायिक गेट-अप दिया गया जिसमें डिजाइन, लेआउट और विषय-वस्तुओं में सुधार जैसे पहलू सम्मिलित हैं।

कृषि, पशुपालन, मात्स्यकी तथा सम्बद्ध विज्ञानों पर विभिन्न श्रेणियों के पणधारियों के लिए 100 से अधिक प्रकाशन प्रकाशित किए गए। भारतीय कृषि के सर्वाधिक प्राधिकृत और बेंचमार्क प्रकाशन - *हैंडबुक ऑफ एग्रीकल्चर* का नवीनतम संशोधित और विस्तृत छठा संस्करण प्रकाशित किया गया। इसकी अब तक लगभग दो लाख प्रतियां बेची जा चुकी हैं और यह प्रकाशन विशेषकर, विद्यार्थियों, विद्वानों, अनुसंधानकर्ताओं, नीति-निर्माताओं तथा वैज्ञानिकों में दिन-ब-दिन अधिक लोकप्रिय होता जा रहा है। इस हैंडबुक में फसल जैवप्रौद्योगिकी, कृषि में सूचना प्रणाली, बौद्धिक सम्पदा अधिकार, मधुमक्खी पालन, रेशम पालन तथा कृषि में देशी तकनीकी ज्ञान जैसे नए विषयों को शामिल किया गया है। भा.कृ.अ.प. ने परिवर्तित हो रही तापमान संबंधी स्थितियों का भारतीय कृषि पर प्रभाव, अनुकूलन और संवेदनशीलता पर एक प्रामाणिक प्रकाशन भी निकाला है जिसका शीर्षक *'ग्लोबल क्लाइमेट चेंज एंड इंडियन एग्रीकल्चर'* है।

वर्ष के दौरान विभिन्न राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तरों पर मास मीडिया तथा प्रौद्योगिकियों के प्रदर्शन के माध्यम से सतही स्तर पर कृषि प्रौद्योगिकी के प्रसार के लिए विशेष प्रयास किए गए। भा.कृ.अ.प. ने अपनी प्रौद्योगिकी शक्ति तथा सूचना उत्पादों के प्रदर्शन हेतु 12 से अधिक प्रौद्योगिकी मेलों/सम्मेलनों में भाग लिया। महत्वपूर्ण विषयों पर प्रिंट तथा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया को सूचनाप्रद प्रेस सामग्री उपलब्ध कराई गई, ताकि भा.कृ.अ.प. के क्रियाकलापों का व्यापक प्रचार हो सके। इसके परिणामस्वरूप परिषद को प्रौद्योगिकियों, नीतियों तथा सफलता की कहानियों से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर व्यापक प्रचार व प्रसार मिला। 'दीपा' ने 20 से अधिक घटनाओं को जन-सम्पर्क तथा प्रचार की सहायता उपलब्ध कराई। ये घटनाएं अंतरराष्ट्रीय/राष्ट्रीय सम्मलेनों में, भा.कृ.अ.प. पुरस्कारों, स्थापना दिवस, महासभा की बैठक (एजीएम) आदि से संबंधित थीं। 'दीपा' ने दूरदर्शन तथा आकाशवाणी पर कृषि से संबंधित विशेष कार्यक्रम भी प्रसारित किए। एनएआईपी की 'कृषि सूचना की भागीदारी के लिए मास मीडिया सहायता को गतिशील बनाना' उप परियोजना के अंतर्गत राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल; भा.कृ.अ.सं., नई दिल्ली; केन्द्रीय कृषि अभियांत्रिकी संस्थान, भोपाल; केन्द्रीय मात्स्यकी प्रौद्योगिकी संस्थान, कोच्चि; केन्द्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, कटक, 'नार्म', हैदराबाद; भारतीय मसाला अनुसंधान संस्थान, कालीकट; भारतीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ तथा केन्द्रीय कटाई उपरांत अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, लुधियाना में संचार कर्मियों के सम्मेलन आयोजित किए गए। इन घटनाओं को प्रिंट तथा इलेक्ट्रॉनिक दोनों माध्यमों से व्यापक रूप से प्रचारित व प्रसारित किया गया।

देश में कृषि संचार को सबल बनाने के लिए भा.कृ.अ.प. के वैज्ञानिकों के क्षमता निर्माण संबंधी क्रियाकलापों से संबंधित कार्यक्रम आयोजित किए गए। 30 से अधिक वैज्ञानिकों को इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मास कम्युनिकेशन, नई दिल्ली में कृषि में सृजनात्मक लेखन पर अभिमुखन प्रशिक्षण प्रदान किया गया और 22 वैज्ञानिकों को भारतीय प्रबंधन संस्थान, लखनऊ में ज्ञान प्रबंधन पर प्रशिक्षित किया गया। 'कृषि तथा सम्बद्ध विज्ञानों में संदर्भ सूचीकरण अनुसंधान सूचना प्रबंधन' पर तात्कालिक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। भा.कृ.अ.प. के संस्थानों के स्टॉफ को प्रकाशनों को प्रोडक्शन संबंधी प्रबंधन पर प्रशिक्षण प्रदान किया गया तथा उन्हें इस पहलू की सार्थक जानकारी दी गई। ❑